

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 11, यिर्मयाह 4-6, आने वाला आक्रमण

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र 11 है, यिर्मयाह 4:5-6:30, आने वाला आक्रमण।

यिर्मयाह की पुस्तक के हमारे अध्ययन के इस सत्र में, हम यिर्मयाह अध्याय चार, श्लोक पाँच, वह इकाई जो यिर्मयाह अध्याय छह, पद 30 तक फैली हुई है, को कवर करने जा रहे हैं।

और हम आगामी आक्रमण के विषय पर विचार करने जा रहे हैं। और जैसा कि हम इसे देख रहे हैं, पश्चाताप करने में विफलताओं के कारण यहूदा पर आने वाले न्याय की चेतावनियाँ, मैं हमें याद दिलाना चाहता हूँ और बस हमें इसकी शुरुआत में सोचने के लिए कुछ देना चाहता हूँ। पिछले खंड में हमने जो अध्ययन किया और इस खंड में यिर्मयाह किस बारे में चेतावनी दे रहा है, उसके बीच हम निश्चित रूप से कारण और प्रभाव का संबंध देखते हैं।

जब यहूदा ईश्वर की पश्चाताप और न्याय से बचने की पेशकश पर सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया देने से इनकार करता है, तो शायद संभावना है कि ईश्वर न्याय से पीछे हट जाएगा। ये वे परिणाम हैं जो उन्हें भुगतने होंगे। मुझे लगता है, कुछ मायनों में, न्यायाधीशों की पुस्तक के आरंभिक भाग में, आपके पास एक कारण है।

इस्राएल ने कनानियों को देश से बाहर नहीं निकाला। इसके परिणामस्वरूप, परिणाम यह हुआ कि उन्होंने अपने देवताओं की पूजा करना शुरू कर दिया और भगवान ने उन्हें निर्णयों की इस श्रृंखला के अधीन कर दिया। हमारे यहाँ भी वही चल रहा है।

हमें बोनो और काटने के आध्यात्मिक सिद्धांत की याद दिलाई जाती है। मनुष्य जो कुछ बोएगा, वही काटेगा। यिर्मयाह लोगों को उन पापों के बारे में चेतावनी दे रहा है जो उन्होंने बोये हैं।

वह उन्हें यह भी दिखा रहा है कि उन्हें क्या परिणाम भुगतने होंगे। होशे ने कहा, इस्राएल ने वायु बोई है; उन्होंने बवंडर की फसल काट ली है। और इसलिए पाप के बारे में सिद्धांतों में से एक यह है कि हमने जो किया है उसे न केवल हमें उसी रूप में वापस मिलता है, बल्कि उस पाप के परिणाम तीव्र और बढ़ जाते हैं क्योंकि उनका निपटारा नहीं किया जाता है।

मैं हमें याद दिलाना चाहता हूँ कि यिर्मयाह के जिस अंतिम खंड का हमने अध्ययन किया था उसके अंत में क्या था। इज़राइल के लिए ये अविश्वसनीय आवर्ती कॉल हैं कि वह झुक जाए, ईश्वर की ओर लौट जाए, उसकी ओर लौट जाए। और हमारे सामने यह प्रश्न रह गया है: वे कैसे प्रतिक्रिया देंगे? इस पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी? जाहिर है, हमारा प्रारंभिक विचार यह है कि अगर हमने पहले कभी किताब नहीं पढ़ी है, अगर हम इज़राइल का इतिहास नहीं जानते हैं, या अगर हम यिर्मयाह की कहानी नहीं जानते हैं, तो हमारी प्रतिक्रिया इस अविश्वसनीय पेशकश के प्रकाश में होगी, उन्होंने इसे छीन लिया।

वे प्रभु के पास लौट आये। उन्होंने उसकी कृपा को पकड़ लिया। वे इस प्रस्ताव का जवाब देने में कैसे असफल हो सकते हैं ताकि वे अपने ऊपर आने वाली आपदा से चूक जाएं? लेकिन हमने पाठ के अंत में देखा कि वापस लौटने के इन आह्वानों का सही तरीके से जवाब नहीं दिया जाएगा।

और फिर, बस हमें यह याद दिला रहा है कि यिर्मयाह की पुस्तक के माध्यम से यह कैसे काम करेगा। अध्याय पाँच, श्लोक तीन यह कहता है: उन्होंने सुधार लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने अपने चेहरे चट्टान से भी अधिक कठोर बना लिये हैं।

उन्होंने शब करने से इनकार कर दिया है। अध्याय आठ, श्लोक चार और पाँच। फिर, जब कोई नीचे गिरता है, तो आप उससे उठने की उम्मीद करते हैं।

जब लोग यात्रा पर चले जाते हैं और लौट जाते हैं, तो आप उनसे वापस आने की उम्मीद करते हैं। तो फिर यह निरंतर विमुखता क्यों है? इजराइल वापस क्यों नहीं आया? प्रभु कहते हैं, अपने हृदय का खतना करो। अध्याय छह, श्लोक 10, कहता है कि उनके कान खतनारहित हैं।

और अध्याय नौ, श्लोक 25 और 26 में, उनके आसपास के सभी बुतपरस्त राष्ट्रों की तरह, उनके भी खतनारहित हृदय हैं। इसलिए, वे कोई प्रतिक्रिया नहीं देंगे। एक अर्थ में, प्रभु अपने लोगों तक पहुंचने से पहले ही जानते हैं कि उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी।

यिर्मयाह अध्याय सात, श्लोक 27 और 28 में प्रभु कहते हैं, इसलिए तुम उनसे ये सभी बातें कहोगे, लेकिन वे तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे। तुम उन्हें पुकारोगे, लेकिन वे तुम्हें उत्तर नहीं देंगे। प्रभु उन्हें जवाब देने का एक वैध अवसर दे रहे हैं।

लेकिन प्रभु उनके चरित्र के प्रकाश में, इस्राएल के पिछले इतिहास के प्रकाश में जानता है कि प्रतिक्रिया क्या होने वाली है। लेकिन प्रस्ताव वास्तव में वहाँ है। मुझे लगता है कि यह हमें यशायाह को समझने में मदद करता है।

प्रभु यशायाह से कहते हैं कि वह प्रचार करें और अपने प्रचार से वह उनके दिलों को कठोर कर देंगे और उन्हें अंधा और बहरा बना देंगे। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर जानबूझकर उन्हें संदेश पर विश्वास न करने के लिए मजबूर कर रहा है। यह केवल इतना है कि वह महसूस करता है कि उनके दिलों की रोशनी में, परमेश्वर के वचन का प्रचार और अनुग्रह की पेशकश उन्हें और अधिक प्रतिरोधी बना देगी।

और पुराने नियम में भयावह चीजों में से एक यह विचार है कि भगवान अक्सर अविश्वास को अविश्वास से दंडित करते हैं। और भगवान, जैसे ही हम भगवान को जवाब देने से इनकार करते हैं, मानव हृदय पर प्रतिरोध या संवेदनहीनता की परतें विकसित हो जाती हैं। और हर बार जब हम ईश्वर को 'नहीं' कहते हैं तो हमारे अंदर संवेदनहीनता की एक परत आ जाती है जो अंततः हमारे लिए प्रतिक्रिया देना कठिन बना देती है।

और एक अर्थ में, भविष्यवक्ताओं के उपदेश के माध्यम से यही होने वाला है। यहां एक वैध प्रस्ताव है, लेकिन भगवान कहते हैं, मुझे पता है कि वे कैसे प्रतिक्रिया देंगे। वे सुनने वाले नहीं हैं।

वे ध्यान नहीं देंगे. दरअसल, भविष्यवक्ताओं का उपदेश उनकी आँखों को और अधिक धुँधला कर देगा और उनके कानों को और अधिक कठोर कर देगा, ताकि वे सुन न सकें। इस प्रक्रिया में इस्राएल और यहूदा के साथ जो हो रहा है वह बिल्कुल वैसा ही है जैसा महामारी के समय फिरौन के साथ हुआ था।

उस प्रक्रिया की शुरुआत में प्रभु मूसा से कहते हैं, मैं फिरौन के दिल को कठोर करने जा रहा हूँ, और मैं अपने लोगों को दासता से मुक्त करके खुद के लिए महिमा प्राप्त करने जा रहा हूँ। लेकिन जब हम उन विपत्तियों में दिल की कठोरता के वास्तविक कार्य को देखते हैं जिन्हें परमेश्वर ने शुरुआत में मिस्र में भेजा था, तो फिरौन ने अपना दिल कठोर कर लिया। और विपत्तियों की अंतिम श्रृंखला में, उसके जवाब में, परमेश्वर का न्यायिक आदेश, उसका वाक्य, फिरौन पर उसकी सज़ा यह है कि प्रभु उसके दिल को कठोर कर देता है और उसे जवाब देने में असमर्थ बना देता है।

वह उसे मूलतः वही देता है जो फिरौन चाहता है। और रोमियों अध्याय 1 हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर पूरी मानव जाति के साथ ऐसा करता है। हम परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं, हम ज्ञान से दूर हो जाते हैं, और इसलिए प्रभु उन्हें उनके पापी विचारों और उनकी पापी इच्छाओं के हवाले कर देता है, और यह पूरी प्रक्रिया हमारे लिए निर्धारित है।

इसलिए, भविष्यवक्ता लोगों को प्रतिक्रिया देने का वैध अवसर दे रहे हैं, लेकिन यहूदा सही तरीके से प्रतिक्रिया नहीं दे रहा है। वे परमेश्वर के पास वापस नहीं आने वाले हैं, और इसलिए अध्याय 4 से 6 में संदेश अत्यधिक न्याय का संदेश है। हमारे पिछले सत्र में, हमने भविष्यवाणी भाषण की शैलियों के बारे में भी बात की थी, और मुझे लगता है कि इनका अध्ययन करना और समझना हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

जैसा कि हम यिर्मयाह की किताब पढ़ रहे हैं, मैं आपके लिए सिर्फ मछली का खाना तैयार नहीं करना चाहता। कुछ मायनों में, मैं चाहूंगा कि आप स्वयं भविष्यवक्ताओं के माध्यम से मछली पकड़ने में सक्षम हों। और इसलिए, इसके एक भाग में शैलियों को समझना शामिल है।

सभी भविष्यवक्ताओं में, हमारे पास निर्णय भाषण की शैली है। और यिर्मयाह अध्याय 5 में, मैं चाहूंगा कि हम इसमें शामिल चीज़ों पर काम करें। निर्णय भाषण में क्या होता है? लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि कभी-कभी अन्य भविष्यसूचक पुस्तकों में भी इसके उदाहरण देखने से मदद मिलती है।

और इसलिए मैं यशायाह अध्याय 5, श्लोक 8 से 25 में एक निर्णय भाषण को देखना चाहूंगा। एक निर्णय भाषण में दो प्रमुख तत्व आरोप और घोषणा हैं। और अक्सर, आरोप और घोषणा के बीच, हमारे पास ले केन शब्द होगा, इसलिए।

यहाँ आरोप है, अभियोग है। ये वो अपराध हैं जो इजराइल ने किए हैं. घोषणा विशिष्ट निर्णय है.

इसलिए, इसके आलोक में, परमेश्वर ऐसा करने की योजना बना रहा है। हमारे पास निर्णय भाषणों की एक श्रृंखला है जिन्हें यशायाह 5, 8 से 25 में एक इकाई के रूप में एक साथ रखा गया है। मैं बस यह देखना चाहता हूँ कि ये दोनों तत्व एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं।

शोक दैवज्ञ के रूप में यह निर्णय भाषण, जो याद रखें, लोगों की मृत्यु का आह्वान कर रहा है यदि वे अपने तरीके नहीं बदलते हैं। लेकिन यशायाह अध्याय 5, पद 8 यह कहता है: धिक्कार है उन पर जो घर से घर और खेत से खेत मिलाते हैं, यहां तक कि जगह न रह जाती है और तुम भूमि के बीच में अकेले रहने को विवश हो जाते हो। आरोप है।

उन्होंने अपने पड़ोसियों और अपने साथी इस्राएलियों की संपत्ति लूट ली है। श्लोक 9, सेनाओं के यहोवा ने मेरे सुनते हुए शपथ खाई है, कि निश्चय बहुत से घर उजाड़ हो जाएंगे, और बड़े और सुन्दर घरों में कोई न रह जाएगा। क्योंकि एपा में दस बीघे अंगूर के बगीचे से केवल एक बत और एक होमेर बीज उपजेगा।

वहाँ घोषणा है। यहोवा इन सुन्दर घरों को छीन लेगा। उन्हें पाने के लिए उन्होंने लोगों को धोखा दिया है।

सज़ा अपराध के अनुरूप है। वे उन घरों का आनंद नहीं लेंगे जो उन्होंने ले लिए हैं। श्लोक 11: हाय उन लोगों पर जो सुबह जल्दी उठते हैं ताकि वे शराब के पीछे भाग सकें, जो देर शाम तक शराब पीते रहते हैं क्योंकि शराब उन्हें उत्तेजित करती है।

उनके पास दावत में वीणा, वीणा, डफ, बांसुरी और शराब है, लेकिन वे प्रभु के कामों पर ध्यान नहीं देते और न ही उसके हाथों के कामों को देखते हैं। यही आरोप है। वे आनंद में डूबे हुए हैं और प्यालों में शराब भरकर पी रहे हैं।

वे इसे पीने के लिए सुबह जल्दी उठते हैं। वे शराब के नशे में धुत रहते हैं। उन्हें संगीत, उत्सव और पार्टियाँ बहुत पसंद हैं, लेकिन भगवान के प्रति उनका कोई सम्मान नहीं है।

इसलिए, श्लोक 12 में यह घोषणा की गई है। मेरे लोग ज्ञान के अभाव में निर्वासन में चले जाएँगे। उनके प्रतिष्ठित लोग भूखे रहेंगे।

उनकी भीड़ प्यास से व्याकुल है। इसलिए अधोलोक ने अपनी भूख बढ़ा ली है और अपना मुंह बहुत अधिक खोल दिया है। और यरूशलेम के कुलीन लोग और उसकी भीड़ डूब जाएगी।

और यहाँ हमारे पास निर्णय की एक लंबी और विस्तृत घोषणा है। और फिर, सज़ा अपराध के अनुरूप है। वे आनंद से भरे हुए हैं।

वे खाने-पीने की चीजों से भरे पड़े हैं। इसलिए, प्रभु उन्हें निर्वासन में भूखा रखने जा रहा है। और जिस तरह से उन्होंने भोजन और शराब को निगल लिया है, श्लोक 14 में कहा गया है, अधोलोक ने अपनी भूख बढ़ा दी है और उसने अपना मुंह बहुत खोल दिया है और उन्हें निगलने जा रहा है।

यह एक विनाशकारी घोषणा है। श्लोक 18, हम फिर से आरोप लगाने पर आ गए हैं। हाय उन पर जो झूठ की रस्सियों से अधर्म को खींचते हैं, जो पाप को रस्सियों की गाड़ियों की तरह खींचते हैं, और जो कहते हैं, उसे जल्दी करो।

उसे अपने काम में तेज़ी लानी चाहिए ताकि हम उसे देख सकें। इस्राएल के पवित्र की सलाह को निकट आने दो और उसे आने दो ताकि हम उसे जान सकें। मेरा मतलब है, उन्हें अपने पाप पर गर्व है, और वे इसे एक गाड़ी में घसीट कर ले जा रहे हैं, और वे परमेश्वर की अवहेलना कर रहे हैं, जैसे, हे प्रभु, यदि आप हमारा न्याय करने जा रहे हैं, तो जल्दी करो और करो।

यदि भविष्यवक्ता सही हैं, यदि वे जो कह रहे हैं वह सही है, तो इसे सामने लाएँ। श्लोक 20, घोषणा से पहले, और भी आरोप हैं। हाय उन पर जो बुराई को अच्छा और अच्छाई को बुरा कहते हैं, जो अंधकार को प्रकाश और प्रकाश को अंधकार कहते हैं, जो कड़वा को मीठा और मीठा को कड़वा कहते हैं।

श्लोक 21, एक और आरोप। हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान और अपनी दृष्टि में चतुर हैं। श्लोक 22: हाय उन पर जो शराब पीने में वीर हैं और वीर पुरुष जो मदिरा मिलाते हैं, जो अपराधी को रिश्वत के लिए तैयार करते हैं और निर्दोष को उसके अधिकार से वंचित करते हैं।

इसलिए, इस बात पर निर्भर करते हुए कि भविष्यवक्ता किस बात पर जोर देना चाहता है, वह एक बहुत ही संक्षिप्त आरोप और एक लंबी घोषणा दे सकता है, या इस मामले में, वह शोक शब्द के इन विभिन्न दोहरावों के साथ क्या कर रहा है, वह आरोपों का ढेर लगा रहा है। यह सब वह सब है जो इज़राइल ने किया है। देखिए वे कितने दोषी हैं।

अंत में, श्लोक 24 में हथौड़ा गिरता है। इसलिए, जैसे आग की जीभ टूठ को भस्म कर देती है और जैसे सूखी घास ज्वाला में डूब जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़ जाएगी। श्लोक 25, इसलिए, यहोवा का क्रोध उसके लोगों के खिलाफ भड़क उठा और उसने उनके खिलाफ अपना हाथ बढ़ाया।

पद 26, वह दूर दूर के राष्ट्रों के लिये संकेत खड़ा करेगा, और पृथ्वी की छोर से उनके लिये सीटी बजाएगा, और वे शीघ्रता से और वेग से उनके पास आएंगे। कोई थका हुआ नहीं है, कोई लड़खड़ाता नहीं है, कोई ऊँघता या सोता नहीं है, किसी का कमरबंद ढीला नहीं है, किसी की चप्पल का बंधन टूटा नहीं है, उनके तीर तेज़ हैं, उनके धनुष झुके हुए हैं, उनके घोड़ों के खुर चकमक पत्थर के समान हैं, और वे चले जाते हैं इस्राएल को उजाड़ दो और भस्म कर दो। यहूदा के लोगों ने कहा था, देखो, यहोवा हमारा न्याय करेगा। जो है सामने रखो। इसे तेजी से होने दीजिए।

यहोवा कहता है कि अशशूर की सेना शीघ्रता से आनेवाली है। जब वे आप पर हमला करने आते हैं तो उनके पास एक टूटा हुआ चप्पल का पट्टा भी नहीं होगा। मेरे लोग शराब पीने में वीर हैं।

वे ओलंपिक ड्रिंकिंग टीम में हैं। वे नौसैनिकों के साथ युद्ध में जाने वाले हैं, जो युद्ध में नायक हैं और युद्ध में बहादुर हैं। कौन जीतने वाला है? बिरादरी पार्टी या नौसैनिक? और यह सुंदर निर्णय भाषण, आरोप और घोषणा है।

और इन आरोपों और घोषणाओं में, वास्तविकता यह है कि सज़ा अपराध के अनुरूप है। अब, हम यिर्मयाह अध्याय पाँच में बिल्कुल वही चीज़ देखते हैं। और मैं चाहूँगा कि हम इस अंश को एक निर्णय भाषण के रूप में देखें, जहाँ, यशायाह अध्याय पाँच की तरह, आरोप और घोषणा का मिश्रण है।

जब भविष्यवक्ता इन शैलियों का उपयोग करते हैं, तो उन्हें उनके स्कूल शिक्षक द्वारा एक फॉर्म नहीं दिया जाता है, जो कहते हैं, ओह, आपको भविष्यवाणी निर्णय भाषण की शैली का पालन करना चाहिए। यह शब्द की लंबाई इतनी होनी चाहिए। इसमें 50% आरोप और 50% घोषणा होनी चाहिए।

वे इन चीज़ों को लेते हैं और रचनात्मक रूप से शैलियों का उपयोग वास्तव में भगवान के एक बहुत ही प्रभावी प्रवक्ता के रूप में करते हैं। कभी-कभी, आरोप पर ही ज़ोर दिया जाता है। कभी-कभी, यह घोषणा है, लेकिन फिर, यह कारण और प्रभाव है।

वे परमेश्वर की बात सुनने में असफल रहे हैं। यहाँ उनके साथ क्या होने वाला है। यिर्मयाह में, प्रभु उन्हें झूमने का अवसर देते हैं।

वे परमेश्वर के पास वापस नहीं लौटे हैं। यहाँ परिणाम है। फिर, इस खंड में भी, भगवान उन्हें केवल यह नहीं बता रहे हैं कि यह स्वचालित रूप से घटित होने वाला है।

यह अभी भी परमेश्वर की उस प्रक्रिया का हिस्सा है जो इस्राएल और यहूदा को उसके प्रति प्रतिक्रिया देने और अपने रास्ते से हटने के लिए प्रेरित करने का प्रयास कर रहा है। लेकिन यहाँ हम चलते हैं। यहाँ यिर्मयाह अध्याय पाँच एक भविष्यसूचक निर्णय भाषण के रूप में दिया गया है।

हम छंद एक से पाँच तक लोगों के खिलाफ एक विस्तृत आरोप के साथ शुरू करते हैं। और यहाँ प्रभु भविष्यवक्ता से क्या कहते हैं। यरूशलेम की सड़कों पर इधर-उधर भागो।

देखिये और नोट कर लीजिये. अपने चौकों में ढूँढ़ो कि क्या तुम्हें कोई ऐसा आदमी मिल सकता है जो न्याय करता हो और सत्य की खोज करता हो ताकि मैं उसे क्षमा कर सकूँ। हालाँकि वे कहते हैं कि प्रभु जीवित है, जो कि प्रभु ने उन्हें अध्याय चार में करने के लिए कहा था, जैसा कि उन्होंने पश्चाताप में उसे जवाब दिया था, फिर भी वे झूठी कसम खाते हैं।

हे प्रभु, क्या तेरी आंखें सत्य की खोज में नहीं रहतीं? तू ने उनको मार तो डाला, परन्तु उनको कुछ भी दुःख न हुआ। तुम ने तो उन्हें खा लिया, परन्तु वे ताड़ना से इन्कार करते हैं। उन्होंने अपने चेहरे चट्टान से भी अधिक कठोर बना लिये हैं।

उन्होंने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया है। आरोप क्या है? प्रभु ने उन्हें वापस लौटने और पश्चाताप करने का अवसर दिया है, लेकिन सुधार स्वीकार करने के बजाय, उन्होंने अपना चेहरा कठोर बना लिया है। वे परमेश्वर को जवाब नहीं देने वाले हैं, इसलिए न्याय आया है।

तो, पैगम्बर आगे कहते हैं, ठीक है, मैंने सोचा कि ये सिर्फ गरीब लोग हैं। उनमें कोई समझ नहीं है, यह कहता है। हाँ, मैं गरीब, अशिक्षित लोगों से बात कर रहा था।

अगर मैं उन लोगों से बात करने जाऊँ जो शिक्षित हैं, जो समाज में अहम भूमिका निभाते हैं, संपन्न लोग हैं, जो जानते हैं कि क्या हो रहा है, तो वे जवाब देंगे। ये गरीब लोग हैं जो प्रभु के मार्ग या अपने ईश्वर के न्याय को नहीं जानते। मैं महान लोगों के पास जाऊँगा, और उनसे बात करूँगा, क्योंकि वे अपने ईश्वर के न्याय का मार्ग जानते हैं, लेकिन उन सभी ने समान रूप से अपना जूआ तोड़ दिया था।

उन्होंने अपने बंधन तोड़ दिए थे। ठीक है, मैंने सोचा, हाँ, यह सिर्फ अशिक्षित लोगों की समस्या है। अगर हम पीएचडी और प्रभावशाली लोगों से बात करें, तो वे जवाब देंगे।

नहीं, वे भी कोई प्रतिक्रिया नहीं देते। और बयानबाजी की दृष्टि से, यहाँ जो चल रहा है वह यह है कि प्रभु एक धर्मी व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं। वह यरूशलेम की सड़कों पर एक ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं जिसे वह न्याय से बचा सकें, और भविष्यवक्ता को उसे भी खोजने में मुश्किल हो रही है।

यहेजकेल अध्याय 9 में भी ऐसा ही एक अंश है। अगर हम उत्पत्ति की पुस्तक में वापस जाएँ, तो हमें अब्राहम द्वारा सदोम और अमोरा के विनाश के बारे में परमेश्वर से बातचीत करने की याद आती है। याद रखें, इसकी शुरुआत इस बात से होती है कि अगर सदोम में 50 लोग और धर्मी लोग हैं, और अब्राहम अंततः परमेश्वर से बातचीत करता है कि अगर शहर में 10 धर्मी लोग हैं, तो परमेश्वर उसे नष्ट नहीं करेगा। खैर, अगर अब्राहम यरूशलेम के लिए बातचीत कर रहा होता, तो उसे एक पर ही समझौता करना पड़ता।

एक तरह से, यहाँ बयानबाजी यही कह रही है। और शहर में फैली उस व्यापक दुष्टता के परिणामस्वरूप, श्लोक 1 से 5 में लगाए गए आरोप श्लोक 6 में एक घोषणा में बदल जाते हैं। इसमें कहा गया है, इसलिए, जंगल से एक शेर की तरह उन्हें मार गिराएगा। रेगिस्तान से एक भेड़िया उन्हें तबाह कर देगा।

एक चीता उनके नगरों पर दृष्टि रख रहा है, और जो कोई उनमें से निकलेगा वह टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा। उन पर एक जंगली जानवर आक्रमण करने वाला है जो उन पर हमला करेगा और उन्हें नीचे गिरा देगा। इतना ही।

जो कुछ वह उन्हें बता रहा है वह घटित होने वाला है, यह बहुत संक्षिप्त लेकिन बहुत प्रभावी और शक्तिशाली है। हम पद 7 में आरोप पर वापस जाते हैं। मैं आपको कैसे क्षमा कर सकता हूँ? तुम्हारे बच्चों ने मुझे छोड़ दिया है। तुमने उन लोगों से शपथ खाई है जो ईश्वर नहीं हैं।

जब मैं ने उन्हें पेट भर खिलाया, तब उन्होंने व्यभिचार किया, और वेश्याओं के घरों में जा पहुंचे। उन्हें अच्छी तरह से खाना खिलाया गया, ऐसा न हो कि वे घोड़े हों, प्रत्येक का नाम उसके पड़ोसी की पत्नी के लिए हो। क्या मैं उन्हें इन कामों के लिये दण्ड न दूँ, यहोवा की यही वाणी है? ठीक है, वहाँ फिर से आरोप है, और यह हमें अध्याय 2 की कल्पना और प्रभु द्वारा वहाँ दिए गए अभियोग पर वापस लाता है।

इजराइल एक वेश्या है। मैंने उन्हें खाना खिलाया, मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया, और मंदिर में मेरा सम्मान करने के बजाय, वे वेश्याओं के घर चले गए और अपने झूठे देवताओं की पूजा की। अध्याय 2, वे गर्मी में जंगली गधों के समान हैं।

यहाँ, वे अच्छी तरह से खिलाए गए, कामुक घोड़ों की तरह हैं और एक जानवर की तरह हैं जो अपनी वासना को नियंत्रित नहीं कर सकता है। मुझे लगता है कि व्यक्तिगत नैतिकता और ईश्वर की आराधना दोनों के संदर्भ में, वे खुद को नियंत्रित करने में असमर्थ रहे हैं। तब घोषणा होती है, क्या मैं उन्हें इन बातों के लिए दण्ड न दूँ? उसकी बेलों की कतारों में से चढ़ो और नष्ट करो, परन्तु उसका अन्त न करो।

उसकी डालियाँ तोड़ दो, क्योंकि वे प्रभु की नहीं हैं। क्योंकि इस्राएल और यहूदा के घराने ने मेरे प्रति बड़ा विश्वासघात किया है। उन्होंने यहोवा के विषय में झूठी बातें कही हैं।

तो, यह घोषणा है। प्रभु उन्हें अंगूर के बगीचे की तरह उजाड़ने जा रहा है, और फिर भी वह कहता है, इस तथ्य के बावजूद कि मैं यह विनाशकारी न्याय ला रहा हूँ, मैं उनका पूर्ण रूप से अंत नहीं करूँगा। हम श्लोक 12 में आरोप पर वापस आ गए हैं।

उन्होंने यहोवा के वचन के विषय में झूठ बोला है, और कहा है, वह कुछ नहीं करेगा, न हम पर कोई विपत्ति आएगी, न हम तलवार देखेंगे, न अकाल। भविष्यद्वक्ता वायु बन जाएंगे। वचन उनके मन में नहीं है; इसी प्रकार उनके साथ ऐसा ही किया जाएगा।

हम न्याय की इन चेतावनियों पर विश्वास नहीं करते। पद 14 में यह घोषणा की गई है: इसलिए, लाकन, सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, क्योंकि तूने यह वचन कहा है, देख, मैं अपने वचन तेरे मुँह में आग बनाऊँगा।

और ये लोग ऐसा करेंगे, और आग उन्हें भस्म कर देगी। देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ दूर से एक राष्ट्र ला रहा हूँ, यहोवा की वाणी है, एक स्थायी राष्ट्र, एक प्राचीन राष्ट्र, एक ऐसा राष्ट्र जिसकी भाषा तुम नहीं जानते, और न ही तुम समझ सकते हो कि वे क्या कहते हैं। और फिर, यह यशायाह 5 की तरह ही है। मैं इस शक्तिशाली, क्रूर सेना को ला रहा हूँ, और मरीन हमला करने वाले हैं।

और युद्ध और लड़ाई में चैंपियन फ्रैट हाउस पर हमला करने जा रहे हैं। और प्रभु विनाशकारी न्याय लाने जा रहा है। वे उनके खिलाफ खड़े नहीं हो पाएंगे।

और मैं इस अंश की ओर आकर्षित हूँ जहाँ हम आरोप और घोषणा पर वापस जाते हैं। मैं श्लोक 14 में उस अंश की ओर आकर्षित हूँ, जहाँ लिखा है कि यिर्मयाह के मुँह में प्रभु का वचन आग की

तरह बन गया। क्या हमें परमेश्वर के वचन की शक्ति के बारे में कोई समझ है? मेरा मतलब है, हम ये सभी विनाशकारी चीजें देखते हैं जो होने वाली हैं।

एक शहर और एक राष्ट्र नष्ट होने वाले हैं। शत्रु सेना इस स्थान पर पूर्ण विनाश करने वाली है। लेकिन आखिरकार, यह सेना नहीं है।

यह परमेश्वर के वचन की शक्ति है। मुझे याद है एंडी डिलार्ड ने एक बार कहा था कि अगर हम वास्तव में उस शक्ति को समझते हैं जिसका हम रविवार को भगवान की पूजा करने आते समय आह्वान कर रहे थे, तो हम पूजा करने के लिए बोनट के बजाय लड़ाकू हेलमेट पहन रहे होते क्योंकि भगवान और उनका शब्द एक पूर्ण अग्नि है।

और जब हम परमेश्वर के वचन का प्रचार और शिक्षा देते हैं, तो परमेश्वर के वचन में अविश्वसनीय शक्ति होती है। यह पत्थर और चट्टान को तोड़ता है। यह मानव हृदयों पर विजय प्राप्त करता है।

स्पर्जन ने इस आशय की बात कही कि हम, व्यक्ति के रूप में और प्रचारक के रूप में, घरेलू मक्खी को जीवन देने की शक्ति नहीं रखते हैं। हम कैसे सोचते हैं कि हम पापियों को पुनर्जीवित कर सकते हैं? यह परमेश्वर का वचन है जो ऐसा करता है। परन्तु इसका विपरीत प्रभाव यह होता है कि प्रभु का वचन भी एक आग है जो विनाश लाने की शक्ति रखती है।

चूँकि हम ईश्वर के प्रति वफादार हैं, ईश्वर अपने वचन का उपयोग या तो निर्माण करने और रोपने के लिए करता है या तोड़ने और नष्ट करने के लिए करता है। लेकिन किसी भी तरह से, परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा है, और परमेश्वर का वचन अपना कार्य कर रहा है।

और यह भविष्यवक्ता के मुँह में आग है। स्मरण करो कि यहोवा ने अध्याय एक में यिर्मयाह से क्या कहा था, मैं अपने वचन तेरे मुँह में डालूँगा, और तब तू ढाएगा, उखाड़ फेंकेगा, उखाड़ेगा, और नष्ट कर देगा, या तू बनाएगा और लगाएगा। एक तरह से, यिर्मयाह वास्तव में ये काम कर रहा है।

ऐसा लगता है जैसे एक राजा क्या करेगा। ऐसा लगता है कि आखिरकार, ईश्वर क्या करेगा। लेकिन यह परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपने वचन की शक्ति के माध्यम से कार्य कर रहा है।

तो, अध्याय पाँच में न्याय भाषण, आरोप और घोषणा के बीच का अंतरसंबंध, जैसा कि आप भविष्यवक्ताओं का अध्ययन कर रहे हैं, ध्यान दें कि ये न्याय भाषण कैसे काम करते हैं। यदि आप यिर्मयाह 5 पर कोई संदेश या पाठ पढ़ा रहे हैं, तो अक्सर इस अंश को इन अलग-अलग खंडों में विभाजित करने से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि अपने संदेश को कैसे विभाजित किया जाए। यह आपके लिए रूपरेखा प्रदान करता है।

और इसलिए, यह शैली पर ध्यान देने के लाभों में से एक है। लेकिन आरोप यह है कि भगवान एक आक्रमणकारी सेना लाने वाले हैं। और अध्याय चार से छह इसी बारे में हैं।

फिर से शैली के साथ चलते हुए, मैं चाहता हूँ कि हम अपना ध्यान फिर से एक और उपकरण पर केंद्रित करें जिसका उपयोग भविष्यवक्ता करते हैं। फिर से, चित्र, अलंकार और शब्द चित्र। एक आक्रमणकारी सेना आ रही है।

अब भविष्यवक्ता आसानी से बता सकता था, यहां सेना का आकार है, यहां संख्याएं हैं, यहां वे रणनीतिक स्थान हैं जिन पर वे आक्रमण करने जा रहे हैं, यहां आक्रमण का समय है। लेकिन भविष्यवक्ता वास्तव में ऐसा नहीं करता है। पैगम्बर हमें कोई सैन्य रिपोर्ट नहीं देता।

वह हमें सीएनएन अपडेट नहीं देते। इसके बजाय वह जो करता है वह यह है कि जब यह सेना यहूदा पर आक्रमण करेगी तो वह कैसा होगा इसकी ज्वलंत तस्वीरें चित्रित करता है। जैसा कि हमने पिछले वीडियो में बताया है, पुस्तक में इस बिंदु पर राष्ट्र का नाम और सेना की पहचान भी निर्दिष्ट नहीं है।

हम नहीं जानते कि यह कौन है। हमें आश्चर्य है कि क्या, यिर्मयाह के मंत्रालय के शुरुआती दिनों में, यिर्मयाह स्वयं भी जानता था कि यह कौन होने वाला है। शायद अन्य संभावनाएं भी थीं। लेकिन यिर्मयाह विभिन्न शब्द छवियों के माध्यम से ज्वलंत चित्र चित्रित करने जा रहा है।

इस सेना की ताकत और शक्ति को देखो। जब यह सेना आएगी तो यह कैसी होगी? और इसलिए, यिर्मयाह के इस भाग में जो पहली छवि दी गई है वह यह है कि दुश्मन सेना की तुलना एक विनाशकारी शिकारी से की गई है। अध्याय चार, श्लोक सात में, एक शेर अपनी झाड़ी से निकल आया है, और राष्ट्रों का नाश करनेवाला अपने स्थान से निकल आया है ताकि तुम्हारी भूमि को उजाड़ दे, और तुम्हारे शहर बर्बाद हो जाएँ।

यहूदा के विरुद्ध एक सिंह उग्र होकर दहाड़ने वाला है। अध्याय पाँच, श्लोक छः, वही बात। इसलिए, जंगल से एक सिंह उन्हें मार गिराएगा।

रेगिस्तान से एक भेड़िया उन्हें तबाह कर देगा। एक तेंदुआ उनके शहरों पर नज़र रख रहा है। जो कोई भी उनसे बाहर जाएगा, उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा क्योंकि उनके अपराध बहुत हैं और उनके धर्मत्याग बहुत बड़े हैं।

क्या आप अपने पड़ोस में छोड़े गए शेर की तस्वीर की कल्पना कर सकते हैं? परमेश्वर यहूदा के लोगों के विरुद्ध यही करने की धमकी दे रहा है। अध्याय चार, श्लोक 11 से 13 में, एक अन्य छवि का उपयोग किया गया है। सेना कैसी होगी इसकी एक और तस्वीर दी गई है।

वहां की सेना गर्म पूर्वी सिरोको हवा की तरह होने वाली है जो तूफानी ताकत के साथ यहूदा की भूमि में बहती है। कभी-कभी, जब ये हवाएँ उस प्रकार की शक्ति के साथ आती थीं, तो वे घरों को नष्ट कर देती थीं या फसलों को नष्ट कर देती थीं। कम से कम, वे बहुत असुविधा लेकर आये।

मैंने यरूशलेम में इन तूफानी तूफानों की तस्वीरें और चित्र देखे हैं जब रेत और कण आकाश में भर जाते हैं और मूल रूप से सूर्य को लगभग धुंधला कर देते हैं। यह शत्रु सेना ऐसी ही होने वाली है। अध्याय चार, श्लोक 11 कहता है, और यरूशलेम में इन लोगों के विषय में यह कहा जाएगा,

कि जंगल के ऊंचे स्थानों से मेरी प्रजा की बेटी की ओर गर्म हवा चल रही है, न कि उन्हें झपकाने या शुद्ध करने के लिये।

मेरे लिए एक बहुत तेज़ हवा आती है। अब मैं ही उन पर निर्णय सुनाता हूँ। यह ऐसी हवा की कल्पना है जो मुझे लगता है कि मई और जून के महीनों में रेगिस्तान से पूर्व दिशा से आ सकती है, बजाय इसके कि पश्चिम में समुद्र से आने वाली शांत हवाएँ चले। यह तबाही लाने वाली है।

साल के उस समय जब लोग अनाज की कटाई कर रहे होते थे, वे पहाड़ी की चोटी पर जाकर अनाज को अलग करने के लिए ज़मीन पर चढ़ जाते थे, और हवा उन्हें अनाज को अलग करने में मदद करती थी क्योंकि यह भूसी को उड़ा देती थी और अनाज ज़मीन पर गिर जाता था, और फिर वे उसे इकट्ठा कर पाते थे। यह हवा भूसी और अनाज दोनों को उड़ा ले जाती है। यह एक ऐसी हवा है जिसे तबाह करने और नष्ट करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

पद 13 में लिखा है कि सेना बादलों की तरह और उसके रथ बवंडर की तरह ऊपर आएँगे। उसके घोड़े उकाबों से भी तेज़ हैं। हम पर हाय, क्योंकि हम बर्बाद हो गए हैं।

तो, आप कल्पना कर सकते हैं कि यह विनाशकारी हवा पूरे देश में बह रही है। न्याय और आक्रमणकारी सेना की एक और तस्वीर, अध्याय 4, श्लोक 23 से 26। और शायद यह, शायद, इस खंड में, इस आक्रमणकारी सेना द्वारा किए जाने वाले कार्यों का सबसे चरम चित्रण है क्योंकि हम यिर्मयाह अध्याय 4, श्लोक 23 में एक और पवित्रशास्त्र मार्ग की प्रतिध्वनि सुनने जा रहे हैं।

नबी कहते हैं, "मैंने धरती पर नज़र डाली और पाया कि वह बेजान और खाली थी। मैंने आसमान की तरफ़ देखा और पाया कि उनमें कोई रोशनी नहीं थी। मैंने पहाड़ों की तरफ़ देखा और पाया कि वे काँप रहे थे।

और सारे पहाड़ और पहाड़ियाँ इधर-उधर हो गईं। मैंने देखा कि वहाँ कोई आदमी नहीं है। और आकाश के सारे पक्षी उड़ गए हैं।

मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि फलवन्त भूमि मरुभूमि बन गई है। और सब नगर यहोवा के साम्हने और उसके भड़के हुए कोप के साम्हने खण्डहर हो गए। अगर मैं अब एक प्रश्नोत्तरी दूँ और पूछूँ, तो आपने बाइबिल के किस अंश के बारे में सोचा? मुझे लगता है कि हममें से अधिकांश लोग इसका उत्तर जानते होंगे।

मैं ने पृथ्वी की ओर दृष्टि की, और क्या देखा कि वह निराकार और शून्य है। यह तोहु वोबोहू था, बिल्कुल वही अभिव्यक्ति जिसका उपयोग उत्पत्ति अध्याय 1, श्लोक 2 में उन दिनों से पहले की अनगढ़ पृथ्वी के बारे में बात करने के लिए किया गया है जब भगवान ने रचना और आकार और आकार देना शुरू किया था। जब बेबीलोन यहूदा पर आक्रमण करेगा, तो यह सृष्टि के विनाश के समान होगा।

और हम यिर्मयाह की पुस्तक में कई बार देखते हैं कि प्रभु मूल रूप से मुक्ति के इतिहास को पूर्ववत करने जा रहे हैं। यिर्मयाह के जीवन के अंत में यहोवा ने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला था। यहोवा उन्हें मिस्र वापस ले जाएगा।

लेकिन यहाँ उससे भी कहीं ज़्यादा गंभीर बात है। प्रभु वास्तव में सृष्टि को ही नष्ट करने जा रहे हैं। और ब्रेंट सैंडी की पुस्तक, प्लॉशेयर्स, एंड प्रूनिंग हुक्स से हमने जो पहले बयान दिया था, उस पर वापस जाते हुए, हम भविष्यवक्ताओं में ईश्वर के क्रोध और ईश्वर के प्रेम की चरम सीमा देखते हैं।

और एक अर्थ में, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि भविष्यसूचक अतिशयोक्ति के उपयोग के माध्यम से बेबीलोन का आक्रमण ऐसा है मानो परमेश्वर स्वयं पृथ्वी को नष्ट करने जा रहा है। और फिर उसके बाद की आयतों में, उत्पत्ति 1 की और प्रतिध्वनियाँ हैं। उत्पत्ति 1 में परमेश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ें। मनुष्य, आयत 25। आकाश के पक्षी, आयत 25।

जानवर, रोशनी, भगवान द्वारा बनाई गई सभी चीज़ें गायब हो जाती हैं। तो एक बर्बाद, तबाह, बंजर ज़मीन की कल्पना करें। जब सेना आएगी तो यह ऐसी ही होगी।

पद 28. इस कारण पृथ्वी विलाप करेगी, और आकाश अंधकारमय हो जाएगा। क्योंकि मैं ने यह कह दिया है, मैं ने युक्ति की है, और मैं न पछताऊंगा, मैं न पीछे हटूंगा।

इसलिए, वे परमेश्वर की ओर मुड़ने से इनकार करते हैं, और इसलिए परमेश्वर उनकी ओर नहीं मुड़ता। और इसलिए, शुरुआत में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। श्लोक 28 में, यह पृथ्वी और आकाश हैं जो इस विनाशकारी न्याय के प्रभाव का अनुभव करते हैं।

और फिर, अंत में, एक श्लोक में जिसे हम पहले ही पढ़ चुके हैं, सेना का वास्तविक चित्रण है। ये सभी चित्र इसी के बारे में हैं। हे यहोवा के घराने, मैं तुम्हारे विरुद्ध दूर से एक राष्ट्र को ला रहा हूँ, यहोवा की यह वाणी है।

यह एक स्थायी राष्ट्र है। यह एक प्राचीन राष्ट्र है। यह एक ऐसा राष्ट्र है जिसकी भाषा आप नहीं जानते, न ही आप समझ सकते हैं कि वे क्या कहते हैं।

और यहाँ और भी कल्पनाएँ हैं। उनका तरकश एक खुली कब्र की तरह है। वे सभी शक्तिशाली योद्धा हैं।

इस्राएल में अंतिम संस्कार होने वाला है। वे तुम्हारी फसल और तुम्हारा भोजन खा जाएँगे। वे तुम्हारे बेटे और बेटियों को खा जाएँगे।

यह सेना आपको पूरी तरह से निगल जाएगी। अब अगर मैं इस बारे में सोच रहा हूँ, तो सेना ही काफी विनाशकारी है। लेकिन इन अंशों में मैंने जो कुछ भी सुना है, वह यह है कि यह कल्पना अंततः हमें इस तथ्य की ओर इशारा कर रही है कि ईश्वर स्वयं हमलावर होने जा रहा है।

जब भविष्यवक्ता कहता है कि इस्राएल या यहूदा के विरुद्ध आने वाली सेना एक दहाड़ता हुआ सिंह है, तो हमें अमोस की पुस्तक की पहली आयत याद आती है, प्रभु सिंघोन से दहाड़ता है और वह न्याय करने के लिए अपने ही लोगों के विरुद्ध आ रहा है। वे केवल बेबीलोन के सिंह का सामना नहीं कर रहे हैं। वे स्वयं परमेश्वर का सामना करने के लिए तैयार हैं।

और याद रखो अमोस कहता है, अपने परमेश्वर से मिलने की तैयारी करो। यहूदा को यही करने का अवसर मिलने वाला है। जब यह सेना को गर्म तूफानी हवा के रूप में और पंखों और बादलों के रथों पर आने की बात करता है, तो हमें याद दिलाया जाता है कि भगवान को अक्सर भजनों में या पुराने नियम में अन्य स्थानों पर भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। बादलों का सवार, जो अपने बादल रथ पर आकाश में घूमता है और युद्ध करता है।

जब वह पृथ्वी पर आता है, तो पृथ्वी उसकी उपस्थिति में पिघल जाती है और भस्म हो जाती है। यहूदा के पास बेबीलोन की सेना की तुलना में कहीं अधिक गंभीर विचार करने के लिए है। परमेश्वर, अपने तूफान रथ, अर्थात् बादलों पर सवार, पर सवार होकर, इस्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिए नीचे आ रहा है।

उन पर हमला करने वाली सेना की इस्तेमाल की गई अन्य छवियों में से एक अध्याय पांच, श्लोक 17 में है, इसमें उनके फसल खाने और अपना भोजन खाने का उल्लेख है। मुझे लगता है कि वहां चित्रण एक टिड्डे झुंड का किया गया है जो अक्सर मध्य पूर्व से होकर गुजरता है और पूर्ण तबाही और विनाश लाता है। वास्तव में, यदि आप खबरों पर नजर रखते हैं, तो आप अक्सर उन तरीकों के बारे में पढ़ेंगे कि टिड्डियों के झुंड आज दुनिया के इस हिस्से में लोगों के लिए जबरदस्त समस्याएं पैदा करते हैं।

2002 में अफगानिस्तान में, वे करोड़ों टिड्डियों के झुंड से निपट रहे थे, जिसने अंततः चार मिलियन लोगों को प्रभावित किया। इन टिड्डियों से छुटकारा पाने के लिए यह इतनी विकट समस्या थी कि अफगानिस्तान के 10,000 लोग इसमें शामिल थे; उन्होंने खाइयाँ बनाईं। उन्होंने प्लास्टिक के टुकड़ों और उनके पास जो कुछ भी था, उससे टिड्डियों को खाइयों में भगाया और अंततः उन्हें दफना दिया और ढक दिया।

1988 में, इतिहास के सबसे भयानक टिड्डियों के झुंडों में से एक ने 11 मिलियन वर्ग मील और 55 देशों को प्रभावित किया। आम तौर पर, एक बड़े टिड्डे के झुंड में टिड्डियों के बादल शामिल होते हैं जो 100 या 150 वर्ग मील तक फैल सकते हैं। इस विशेष झुंड में टिड्डियों का झुंड था, जिसका बादल 400 वर्ग मील तक फैला हुआ था और इसमें 50 मिलियन टिड्डियाँ शामिल थीं जो हर रात 100 टन भोजन खाने में सक्षम थीं।

यहूदा को यही अनुभव होने वाला है। बेबीलोन की सेनाएँ और परमेश्वर इस सब के पीछे दहाड़ते हुए सिंह के रूप में, यहूदा पर हमला करने वाले तूफान में आने वाले बादलों के सवार के रूप में, प्रभु अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इस सेना का उपयोग कर रहे हैं। अब, भविष्यवक्ताओं में एक और बहुत ही महत्वपूर्ण धार्मिक अवधारणा है जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ जो न्याय के इन विचारों से संबंधित है।

जब भविष्यवक्ता उन सेनाओं के बारे में बात करते हैं जो परमेश्वर के न्याय को प्रभावित करने, लोगों पर प्रभु का विनाश लाने के लिए आने वाली हैं, तो इसे अक्सर प्रभु के दिन के रूप में वर्णित किया जाता है। यह बस एक सामान्य भविष्यसूचक अभिव्यक्ति है। यिर्मयाह अध्याय 4, श्लोक 9 में, हमारे पास प्रभु का कार्यकाल का दिन नहीं है, लेकिन श्लोक 9 में, यह घोषणा करता है, उस दिन राजा और अधिकारियों दोनों का साहस विफल हो जाएगा।

और इसलिए, मेरा मानना है कि जब वह इस विनाशकारी फैसले का वर्णन कर रहा है, तो यिर्मयाह जो कर रहा है वह यह है कि वह इसे इज़राइल की भविष्यवाणी परंपरा के भीतर प्रभु के दिन के रूप में चित्रित कर रहा है। और जब भविष्यवक्ता उस शब्द का उपयोग करते हैं, तो वे इसे उस तरीके से उपयोग करते हैं जो कभी-कभी हम नए नियम के परिप्रेक्ष्य से इसके बारे में सोचते हैं उससे थोड़ा अलग होता है। क्लेश के दिन पर हमारा दृष्टिकोण, या हम अंतिम दिनों के निर्णय और युगांत संबंधी निर्णयों की ओर आकर्षित हैं जिन्हें भगवान अपने राज्य की तैयारी में लाने जा रहे हैं।

भविष्यवक्ता प्रभु के दिन शब्द का प्रयोग थोड़े अलग तरीके से करते हैं। वे प्रभु के दिन शब्द का उपयोग उस निर्णय को संदर्भित करने के लिए करते हैं जो अंत समय में होने वाला है, लेकिन संभवतः अधिक बार, वे इसका उपयोग उस निर्णय को संदर्भित करने के लिए करते हैं जो निकट भविष्य में होने वाला है। और कभी-कभी, जैसा यहां होता है, जैसे मैं वर्जीनिया में यात्रा करता हूं और उन खूबसूरत जगहों को देखने जाता हूं जहां हमारे पास पहाड़ हैं, आप अक्सर दो पर्वत चोटियों को देखते हैं, जैसे ही आप उन्हें दूर से देखते हैं, वे ऐसे दिखते हैं जैसे वे सही हों एक साथ।

जैसे-जैसे आप करीब आते हैं या दूसरी तरफ जाते हैं और एक अलग दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, आपको समझ में आता है कि उनके बीच एक बड़ा अंतर है। इसलिए, मुझे लगता है कि कभी-कभी भविष्यवक्ताओं में, भविष्यवक्ता प्रभु के आने वाले दिन को देखते हैं। वे दोनों को निकट भविष्य में होने वाले निकट निर्णय को देखते हैं।

वे, कभी-कभी, उस दूर के न्याय को देखते हैं जो अंतिम दिनों या महान क्लेश में होने वाला है। कभी-कभी जब हम भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं तो दोनों के बीच अंतर करना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन प्रभु के दिन की यह अभिव्यक्ति इस विचार से संबंधित प्रतीत होती है कि परमेश्वर के पास एक दिन है जब वह, एक योद्धा के रूप में, नीचे आकर अपने शत्रुओं का न्याय करने वाला है।

प्राचीन निकट पूर्वी राजाओं के इतिहास में या उनके अभिलेखों में, जैसा कि उन्होंने अपनी उपलब्धियों के बारे में लिखा है, प्राचीन निकट पूर्व के राजनेताओं के बारे में आश्चर्यजनक बातों में से एक यह है कि कभी-कभी वे झूठ बोलते हैं, मनगढ़ंत बातें करते हैं और बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। मुझे पता है कि यह कल्पना करना कठिन है कि ऐसा फिर कभी नहीं होगा, लेकिन कभी-कभी वे अपनी उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं, जैसे कि, मैंने न केवल अपने दुश्मन को हराया, बल्कि मैंने उन्हें एक ही दिन में हरा दिया। मिस्र के कुछ इतिहासों में एक ऐसा अंश है जिसमें राजा और उसके सैनिकों को स्पष्ट रूप से उन स्थानों से ले जाना शामिल है, जहाँ वे एक ही दिन में यात्रा नहीं कर सकते थे, लेकिन एक ही दिन में, मैंने अपने दुश्मन को हरा दिया।

इस्राएलियों के बीच होने वाली लड़ाइयों में से एक में मैंने इस्राएलियों को दोपहर से पहले ही हरा दिया था। मैंने दोपहर के भोजन से पहले ही उनका ख्याल रखा। तो, भविष्यवाणी का संदेश है, और यह मुझे प्राचीन निकट पूर्वी बकवास की याद दिलाता है।

मैं अपने शत्रु को एक ही दिन में हरा सकता हूँ। भगवान सचमुच एक ही दिन में अपने शत्रुओं को हरा देंगे। और ऐसा करने के लिए भगवान की शक्ति और क्रोध, दिन एक विस्तारित अवधि को संदर्भित कर सकता है, लेकिन यह ऐसा है जैसे भगवान अपने रथ पर सवार होकर धरती पर आते हैं, धरती उनकी उपस्थिति में पिघल जाती है, और भगवान केवल अपनी उपस्थिति से अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

अशूर के राजा अक्सर कहते थे, अपने तेज की शक्ति से मैंने अपने शत्रु को परास्त कर दिया। प्रभु सचमुच ऐसा करने में सक्षम होंगे। अब, भविष्यद्वक्ता इस्राएल के लोगों को यह दिखाना चाहते थे कि प्रभु का दिन वह समय था जब परमेश्वर अपने शत्रुओं को परास्त करेगा।

लेकिन उनके लिए यह समझना मुश्किल था कि अब वे ही लोग थे जो इसराइल के दुश्मन बन गए थे। ईश्वर एक स्वतंत्र एजेंट बन गया है। उसने अपनी वर्दी बदल ली है।

अब, पवित्र युद्ध परंपराओं के बजाय जहां भगवान इज़राइल के लिए लड़ेंगे, इज़राइल भगवान का दुश्मन बन गया है। और इसलिए यिर्मयाह इसी ओर इशारा और उल्लेख कर रहा है। उस दिन, यहोवा का दिन, परमेश्वर इस्राएल के लिये नहीं लड़ेगा।

यह यहोवा का दिन होगा जब परमेश्वर इस्राएल के विरुद्ध लड़ेगा। अमोस अध्याय पांच, श्लोक 18 और 19 में, यिर्मयाह के पूर्ववर्तियों में से एक, अमोस ने पहले ही इस विचार को स्थापित कर दिया है: इज़राइल की पवित्र युद्ध परंपराओं को उल्टा करना और उसे प्रभु के दिन के संदर्भ में रखना। यहोवा का दिन अब वह समय बन गया है जब यहोवा नीचे आकर इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ने वाला है।

और यहाँ अमोस प्रभु के आने वाले दिन के बारे में क्या कहता है। श्लोक 18 में वह कहते हैं, तुम पर धिक्कार है। और याद रखें कि जब हम ओय या हाय शब्द सुनते हैं तो हम जो सुनते हैं, वह मौत की सजा है।

हाय तुम पर जो प्रभु के दिन की कामना करते हो। तुम प्रभु के दिन की कामना क्यों करते हो? यह अंधकार का दिन है, प्रकाश का दिन नहीं। ठीक है, इस्राएल में क्या हो रहा है, यह देखिए।

वे अशूरियों और बाद में बेबीलोनियों द्वारा उत्पीड़ित होने लगे थे। और पैगंबर कहते हैं, आपकी पवित्र युद्ध परंपराओं के आधार पर, और शायद उनमें से कुछ, आप जानते हैं, शांति के झूठे भविष्यद्वक्ताओं के आधार पर, वे प्रभु के दिन के लिए तरस रहे हैं। हम चाहते हैं कि भगवान नीचे आएँ और हमारे दुश्मनों को हराएँ और हमें मुक्ति दिलाएँ।

और वे प्रभु के दिन का उसी तरह से इंतज़ार कर रहे थे जिस तरह से मेरे बच्चे क्रिसमस का इंतज़ार करते थे जब वे छोटे बच्चे थे। लेकिन आमोस कहते हैं, यहाँ आपको यह समझना है। प्रभु का दिन इस्राएल के लिए प्रकाश और उद्धार का दिन नहीं होने वाला है।

यह अंधकार का दिन होगा। आमोस 5 में श्लोक 19 में यह ऐसा होगा जैसे कोई आदमी शेर से भाग गया हो। हम पहले ही यिर्मयाह में उस सादृश्य का इस्तेमाल होते हुए देख चुके हैं।

और एक भालू उससे मिला। या वह घर में गया और दीवार के सहारे अपना हाथ टिकाया, और एक साँप ने उसे डस लिया। ठीक है, यहाँ बताया गया है कि इस्राएल के लिए प्रभु का दिन कैसा होने वाला है।

यह ऐसा दिन नहीं है जब भगवान आपके दुश्मनों को हराने के लिए नीचे आते हैं। यह ऐसा दिन है जब भगवान आपको हराने के लिए नीचे आते हैं। और आप न्याय से बच नहीं पाएंगे।

आप किसी ऐसे व्यक्ति की तरह होंगे जो शेर से भाग रहा है, और आपको लगता है कि आप उससे कुछ कदम आगे हैं, और आप सीधे एक भालू से टकराने वाले हैं। या शायद किसी तरह आप दाँएँ मुड़ते हैं, और आप शेर और भालू से बच निकलते हैं, और आप घर में जाते हैं, और आप दीवार पर अपना हाथ टिकाते हैं, और आप सोचते हैं, वाह, मैं इससे बच गया। और एक साँप दीवार से निकलकर आपको काटता है।

तुम परमेश्वर के दिन से बच नहीं पाओगे। और पद 20 में, यह प्रभु का दिन नहीं है, अंधकार है और प्रकाश नहीं, और ऐसा अँधेरा है जिसमें कोई चमक नहीं है। आमोस यिर्मयाह का पूर्ववर्ती था।

उसने यह विचार स्थापित किया था कि प्रभु का दिन न्याय का समय होगा। और इसलिए, यिर्मयाह के दिनों के भविष्यवक्ता कह रहे थे, प्रभु का दिन फिर से आ रहा है। यिर्मयाह के समकालीनों में से एक, सपन्याह, प्रभु का दिन आ रहा है।

और यह इस्राएल के लोगों के लिए विनाश का समय होगा। यहाँ वह इसका वर्णन इस प्रकार करता है। यहोवा परमेश्वर के सामने चुप रहो, क्योंकि यहोवा का दिन निकट है।

यहोवा ने एक बलिदान तैयार किया है। यरूशलेम शहर को एक बलिदान की तरह चढ़ाया जाएगा। श्लोक 8, और उस बलिदान के दिन, मैं अधिकारियों और राजपुत्रों और उन सभी को दण्ड दूँगा जो विदेशी पोशाक पहनते हैं।

उस दिन मैं उन सभी को दण्ड दूँगा जो चौखट लांघते हैं। और जो लोग अपने स्वामी के घर को हिंसा और छल से भर देते हैं, उस दिन, यहोवा की यह वाणी है, मछली फाटक से चिल्लाहट सुनाई देगी। श्लोक 12: उस समय, मैं दीपक लेकर यरूशलेम की खोज करूँगा, और मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा।

मैं हर एक दुष्ट को ढूँढ़कर उसे दण्डित करने जा रहा हूँ। प्रभु का महान दिन निकट है। वह निकट है और तेजी से आगे बढ़ रहा है।

यिर्मयाह, यिर्मयाह अध्याय 4, श्लोक 9, उस दिन, यहोवा की घोषणा है, राजा और अधिकारियों दोनों का साहस समाप्त हो जाएगा। अब, आप देखिए, इन सबमें, अंततः हमारे लिए भी एक संदेश है। याद रखें, यहोवा का दिन निकट है, और यहोवा का दिन दूर है।

और इतिहास में भगवान द्वारा लाया गया प्रत्येक निर्णय एक अनुस्मारक है कि अंततः, भगवान का अंतिम दिन अंतिम निर्णय होता है। यशायाह, जब वह अध्याय 2 में प्रभु के दिन के बारे में बात करता है, तो यह एक निर्णय है जहां ईश्वर पूरी मानवता के गौरव को नीचे गिरा देगा। और प्रत्येक राष्ट्र, प्रत्येक राष्ट्र, प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा।

भविष्यवक्ता क्या कहेंगे कि हमने जिन निर्णयों के बारे में लोगों को चेतावनी दी थी, अशूरियों का आगमन, बेबीलोनियों का आगमन, उनमें से प्रत्येक उस सिद्धांत की याद दिलाता है जिस पर हमने इस सत्र की शुरुआत में चर्चा की थी, सिद्धांत बोलने और काटने का। और यदि आप इतिहास को देखते हैं और सोचते हैं कि हम ईश्वर के न्याय से बच सकते हैं, तो आप स्पष्ट बिंदु से चूक रहे हैं। पिछले इतिहास में भगवान का प्रत्येक दिन, छोटे डी, भविष्य के समय, भगवान के महान दिन की याद दिलाता है।

और बाइबल कहती है कि हमें उसके प्रकाश में और उसके प्रति जागरूकता के साथ जीने की जरूरत है। मैं 2 पतरस अध्याय 3, श्लोक 10 से 13 तक नए नियम का एक अंश पढ़कर सत्र का समापन करना चाहता हूँ, और हमें प्रभु के उस दिन के प्रकाश में जीने की याद दिलाना चाहता हूँ जो भविष्यवक्ताओं के दृष्टिकोण से बहुत दूर है, बल्कि एक दिन है। प्रभु वह हर दिन करीब आ रहा है। पतरस यह कहता है: प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, और तब आकाश बड़ी गर्जना के साथ लुप्त हो जाएगा, और आकाशीय पिंड जलकर विलीन हो जाएंगे, और पृथ्वी और काम और जो कुछ उन में है सब नष्ट हो जाएंगे। उजागर किया।

याद रखें, यिर्मयाह ने सृष्टि के विनाश के बारे में बात की थी। बेबीलोन का आक्रमण वैसा ही होगा। ऐसा नहीं होगा।

यह वही होगा। श्लोक 11, यहाँ मुख्य बात है। चूँकि ये सभी चीज़ें अंततः नष्ट होने वाली हैं, इसलिए आपको किस तरह के लोग होने चाहिए जो पवित्रता और ईश्वरीयता के जीवन में हों, प्रभु के आने वाले दिन की प्रतीक्षा करें और उसे जल्दी से जल्दी पूरा करें, जिसके कारण स्वर्ग में आग लग जाएगी और वह नष्ट हो जाएगा और आकाशीय पिंड जलते हुए पिघल जाएंगे, लेकिन उसके वादे के अनुसार, हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिसमें धार्मिकता वास करती है।

मेरा मानना है कि हम नूह के दिनों जैसे समय में जी रहे हैं। लोग खा-पी रहे हैं और कह रहे हैं, अरे, उसके आने का वादा कहाँ गया? भगवान कहते हैं, यदि आप याद दिलाना चाहते हैं कि वास्तविकता क्या है, तो अतीत को देखें। और अतीत में परमेश्वर का प्रत्येक निर्णय भविष्य में आने

वाले हिसाब-किताब के दिन की याद दिलाता है, और उसके कारण, परमेश्वर के लोगों के रूप में, हम उसके प्रकाश में रहते हैं। हम न्याय की वास्तविकता के प्रकाश में रहते हैं जो उन लोगों पर पड़ेगा जो ईश्वर को नहीं जानते हैं, लेकिन हम आशीर्वाद और मोक्ष की वास्तविकता के प्रकाश में भी रहते हैं।

ऐसा समय आएगा जब प्रभु का दिन परमेश्वर के लोगों के लिए उद्धार का दिन होगा। भविष्यवक्ताओं ने प्रभु के दिन के बारे में कुछ ऐसा बताया जो निकट और दूर है, और इसीलिए उनका संदेश कुछ ऐसा है जो आज भी हमारे लिए मायने रखता है।

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र 11 है, यिर्मयाह 4:5-6:30, आने वाला आक्रमण।